आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 3/सितंबर 2024
Received: 10/09/2024; Published: 26/09/2024

कविता

"जीवन धारा"

डॉ. सतीश "बब्बा"

मोबाइल - 9451048508, 9369255051.

ई मेल - babbasateesh@gmail.com

मैं नदिया की धार,

प्रिए पतवार बनो तुम,

किनारे कहें पुकार,

प्रिए इनको मिलवा दो!

सीप से लिया उधार,

प्रिए कंगन बनवा लो,

कहने को मैं धार,

प्रिए तुम मुझे रोक दो!

चलते चलते दूर देश से,

सिल पर पड़े निशान,

कहीं मुझे चैन नहीं पड़ता,

करनी है कुछ बात!

दोनों किनारों से,

ठहर कर बात कर सकूं,

मन की मन में,

कब तक रोक सकूं!

ऐसी समय की धारा को,

कौन है जो रोक सका,

यह जीवन धारा को,

बहने दो बस बहने दो!!

****